राज कॉमिक्स विशेषांक

मूल्य 30.00 संख्या 2282

गुप्त मेहमान

कोंबी, भेड़िया, भोकाल

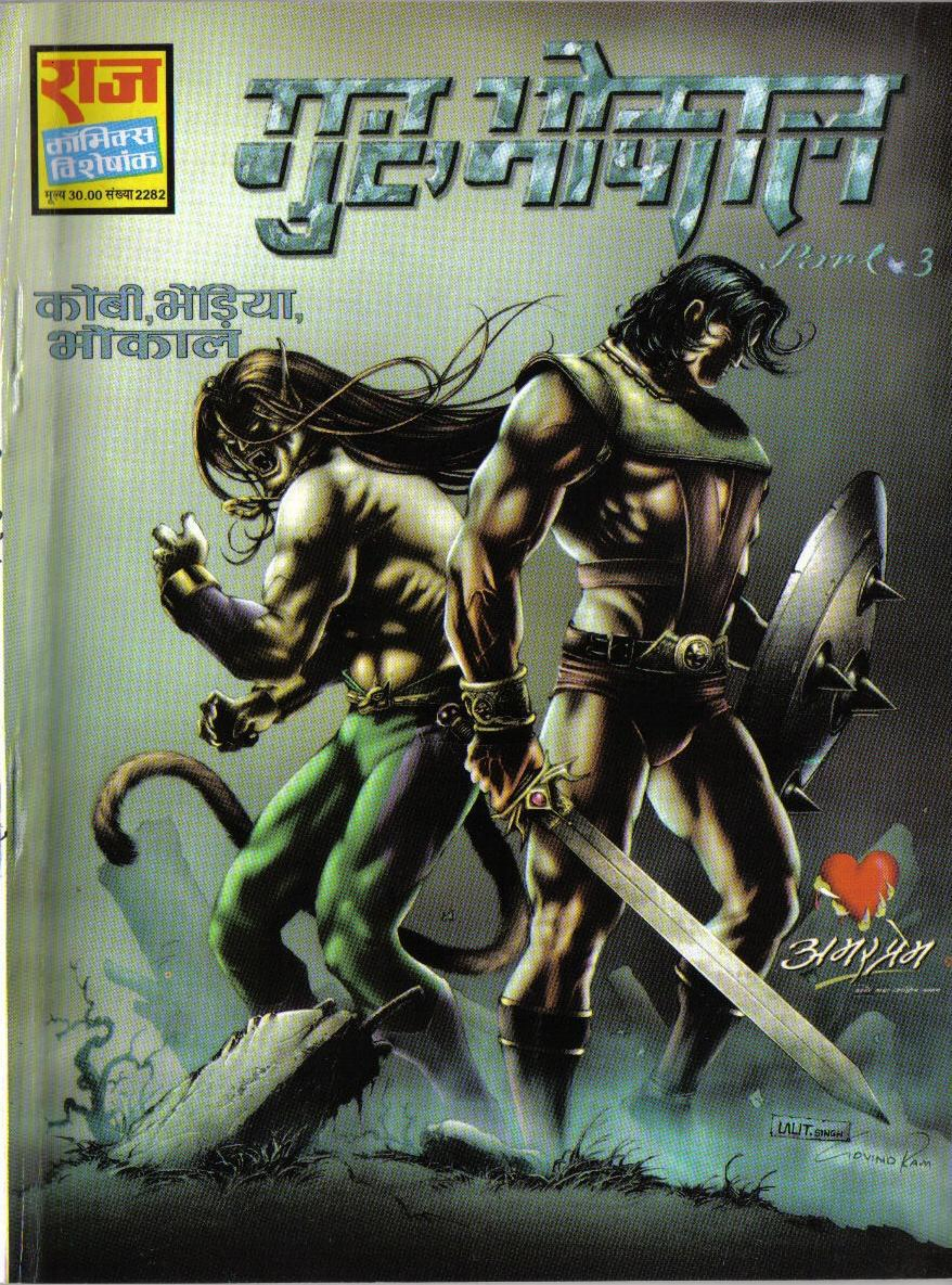

संजय गुप्ता पेश करते हैं!!

गुरु भोवगल

परिकल्पना : अनुपम सिन्हा, संजय गुप्ता
लेखक : नरेन्द्रकुमार वाही
संपादन : मनीष गुप्ता

चित्रांकन : बबिल सिंह
कलर इफेक्ट्स : गोविन्द राम
कॉमिक्राफ्टी : हरीश मेहरा

वुल्फानों की नागरिकों से बंजर हुई जमीन पर धधकते दो शक्ति पुंज!!

गुरुराज भाटिकी----

और!!

कोबी!!!

खामोश रहो!!!

अरे ! आखिर पता तो चले की आप क्या कर रहे हैं?

पुत्र कोबी मैं भेड़िया देवता का आवाहन कर रहा हूं....

वुल्फानों की नीव हो तुम पुत्र!

और मैं चहाता हूं कि उस नींव पर जब कोई इमारत खड़ी हो तो वो इतनी सशक्त हो कि बड़े-बड़े चक्रवात और तूफान भी उसके सामने से वायु के साधारण से झोंके के समान गुजर जाएं।

कर्त्तव्य और भावनाओं के भी होते हैं चक्रवात!!

जिनसे होकर गुजर रहा था महाबली भोकाल!!

विकास नगर का चप्पा-चप्पा मेरे कर्त्तव्य पथ से होकर गुजरता है।

इसकी मिट्टी के एक-एक कण में मैं श्वास लेता हूं।

किसी की कुदृष्टि इस पर पड़ती है तो मेरा दम घुटने लगता है।

राजा घुकट। आज तुमने विकास नगर पर अधिकार करने का दुःसाहस किया है।

इस अपराध के दण्ड स्वरूप रण भूमि में क्यों ना तुम्हारा प्रत्यक्ष रूप से मृत्यु से साक्षातकार कराऊं!!

सेनापति प्रवीण सिंह।

राजा घुकट की मृत्यु के साथ ही युद्ध का ये रक्त रंजित अध्याय समाप्त हो गया।

अध्याय तो आरम्भ हुआ था।

और ये किस छल की बात कर रहे हो तुम?

तुम्हारी पत्नी रूपसी के पिता कुबड़ा शैतान द्वारा तुम्हारी अनुपस्थिति में किए गए छल व षड्यन्त्र की। तुम्हारी पत्नी रूपसी भी रानी के पद के लाभ में अपने पिता का साथ देती रही है।

ये युद्ध एक छल था भोकाला हम छले गए।

धनुषा त...तुम्हे तो मैं अपनी अनुपस्थिति में विकास नगर की सुरक्षा का दायित्व सौंप कर आया था।

कुबड़ा शैतान के सेवक काला चेचक ने विकास नगर में महामारी फैला दी है।

चेचक के प्रभाव से स्थान-स्थान पर शवों के ढेर लग गए हैं।

तुम्हे ये सूचना देने के लिए कूच करते समय रानी मोहिनी, राजकुमार अंकित, सलोनी, हमारे विश्वस्त मंत्री व दरबारी, सभी काला चेचक के प्रभाव में आ कर दम तोड़ चुके थे।

ये तुम क्या कह रहे हो धनुषा। मैं काला चेचक व कुबड़ा शैतान को जीवित नहीं छोड़ूंगा।

न....नहीं। यदि तुमने विकास नगर में प्रवेश किया तो ये महामारी तुम्हें भी अपनी गिरफ्त में ले लेगी। आह...म...मुझे क...कुछ हो रहा है भोकाल।

इससे पहले कि लड़खड़ा कर गिर पड़ता धनुषा, भोकाल ने उसे अपनी बांहों में थाम लिया।

धनुषा तुम ठीक हो ना?

आहा....

हां भोकाल।

किंतु शायद मैं भी काली चेचक...

सेनापति प्रवीण सिंह ने भोकाल को खींच कर धनुषा से अलग किया।

ये छुआ छुत का रोग है भोकाल।

उससे दूर रहो।

आह!

और विकास नगर से तब तक दूर रहो जब तक संकट टल नहीं जाता।

जाओ भोकाल जाओ।

तुम्हें विकास नगर के अस्तित्व का वास्ता।

क्योंकि यदि तुम्हें कुछ हो गया तो कुबड़ा शैतान के षड्यन्त्रों से विकास नगर को कोई नहीं बचा पाएगा।

मेरा मित्र था.... धनुषा मूर्च्छित होकर गिर पड़ा है।

उसे मेरी मदद की आवश्यकता है!!!

छोड़ दो मुझे!

मदद की आवश्यकता केवल जीवित रहने तक होती है भोकाल।

...वो मर चुका है।

और तुम्हारा यहां रहना किसी भी सूरत में खतरे से खाली नहीं।

नहीं!

सूचक...तुम?

सेनापति प्रवीण सिंह सही कह रहे हैं भोकाल।

मेरा दुर्भाग्य है भोकाल कि मैं जब भी आपको मिलता हूं तो किसी दुख:, शोक व संकट से भरे समाचारों की सूचना देने के लिए।

!

?

मैं रानी मोहिनी, राजकुमार अंकित और आपकी भाग्य श्री पत्नी सलोनी के शवों को आपके अंतिम दर्शनार्थ लाया हूं।

किंतु आप इन शवों को भूल कर भी स्पर्श न करें महाबली भोकाल।

शायद अपने इसी कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए बचे थे अब तक मेरे प्राण।

क्योंकि मैं स्वंय भी काली चेचक का शिकार हो चुका हूं। आह!

!

तनाव से भोंकाल की नसें खिंचने लगी थीं।

ओह, नहीं!

ये नहीं हो सकता। ये नहीं हो सकता।

तुम्हें हिम्मत हौंसले व धैर्य से काम लेना होगा भोकाल!

मेरी हिम्मत चूंक रही है सेनापति प्रवीण सिंह....।

....हौंसले जवाब दे रहे हैं....।

....धैर्य दम तोड़ रहा है....।

सिर में भीषण पीड़ा का आभास हुआ था उसे।

मैं....उफ.....!

तुम्हारा यहां रूके रहना खतरे से खाली नहीं महाबली भोकाल। काला चेचक यहां भी आ सकता है। तुम्हे जाना ही होगा भोकाल।

विकास नगर के राज सिंहासन की सुरक्षा का दायित्व तुम्हारे कंधो पर है।

इस दायित्व को पूरा करने की प्रथम शर्त तुम्हारे स्वंय के प्राणों की रक्षा करना है।

इस समय कोई भी तीर और तलवार विकास नगर में फैली महामारी की धार को नहीं काट पाएगा।

जाओ भोकाल जाओ।

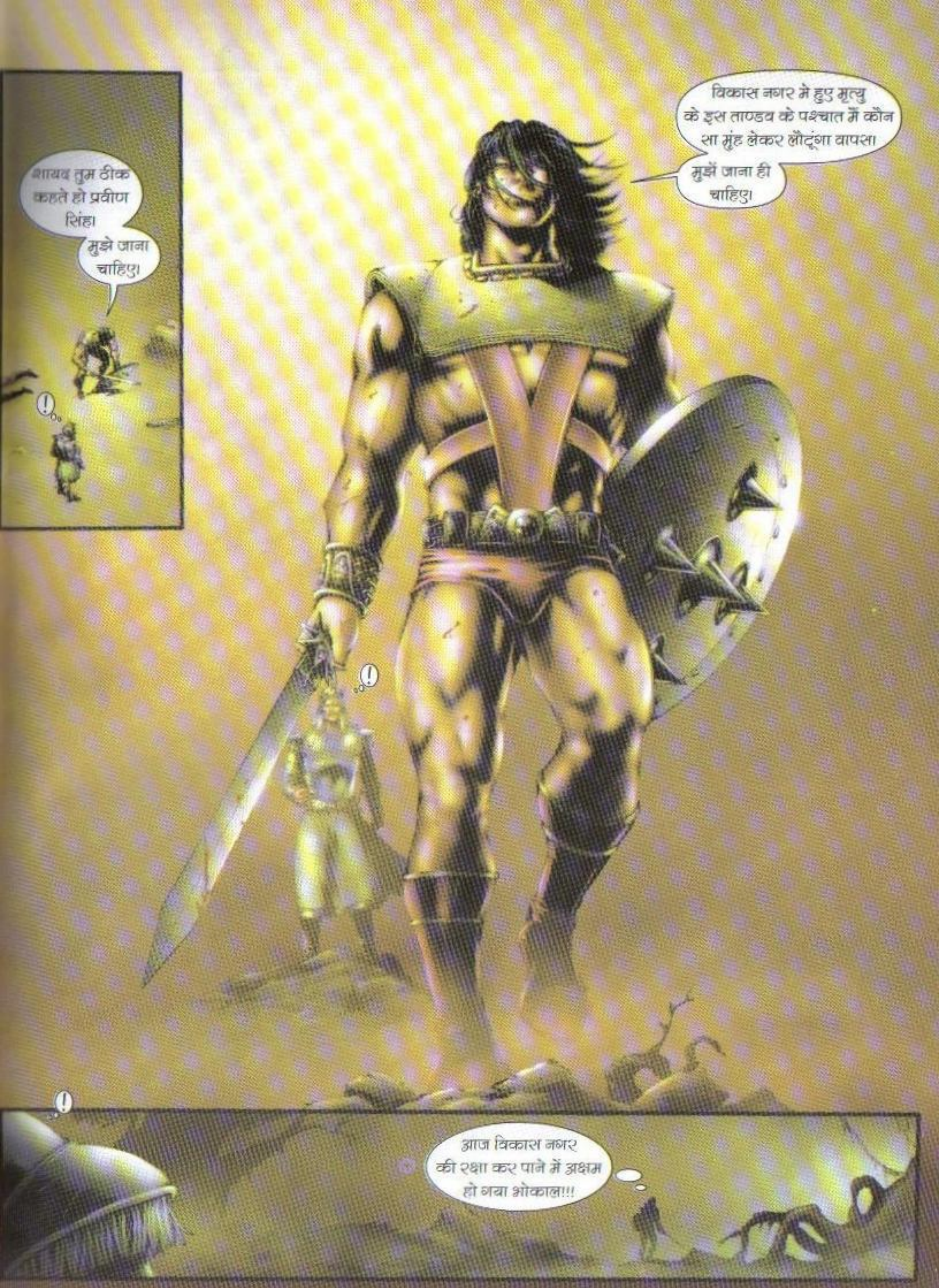
शायद तुम ठीक कहते हो प्रवीण सिंह।
मुझे जाना चाहिए।
!
विकास नगर मे हुए मृत्यु के इस ताण्डव के पश्चात मैं कौन सा मुंह लेकर लौटूंगा वापस।
मुझें जाना ही चाहिए।
!
!
आज विकास नगर की रक्षा कर पाने में अक्षम हो गया भोकाल!!!

हाहाहाहा। सीधे भोकाल के मर्म पर आघात हुआ है। इस मानसिक पीड़ा से अब कभी उबर नहीं पाएगा भोकाल।
और मैंने जो विष की सुई उसे चुभोई है, वो कुछ ही समय में भोकाल को 'मस्तिष्क ज्वर' से ग्रसित कर देगी....।
...इस भीषण रोग के चलते भोकाल की हालत विक्षिप्तों जैसी हो जाएगी। हाहाहा
हाहाहा। अब हमे भी अपने असली रूपों में लौट आना चाहिए।
महामहीम कुबड़ा शैतान के इस नायाब षड्यत्र के पश्चात भोकाल पानी भी नहीं मांगेगा। हाहाहा

और इधर गुरुराज भाटिकी की वो चेष्टा।

हे भेड़िया देवता, मदद!!!

कोबी पुत्रा इसी प्रकार तुम भी भेड़िया देवता का आवाहन करो। मगर अपना दाहिना हाथ हवा में उठाए रखना।

उफ बैठे-बैठे कमर में बल पड़ गए।

ठीक है गुरुराज भाटिकी। आवाहन करता हूं।

इसी पल की प्रतिक्षा थी व्यूहा को।

हाहाहा!

उसी क्षण आसपास 'कुछ' घटना आरम्भ हो गया था।

हे भेड़िया देवता, मदद!!!

तत्क्षण ही कोबी के हाथ में प्रकट हो उठी थी वो गदा।

अरे!

गुरुराज भाटिकी

ये क्या?

ये कैसा अस्त्र है? ऊपर से कद्दू की तरह और....

कोबी। पुत्र संभलो। वो गदा अत्यन्त भारी है।
...नीचे से....
आह!!!
ग....गुरुराज भाटिकी! य...ये कैसा जादू है। म...मुझे आप छः दिखाई पड़ रहे हैं। (गड़ब)
होश में आओ कोबी....
...गदा तुम्हारे हाथ से छूट कर ढलान पर लुढ़क गई है...
...जाओ। उसे लेकर आओ।
भेड़िया देवता की प्रलयंकारी गदा है वो।
तुम्हे ठीक से पकड़नी चाहिए थी।
आपको ये बात पहले बतानी चाहिए थी।
...मैं अभी लेकर आता हूं गदा।
उफ! अभी तक खोपड़ी ताण्डव कर रही है।
कोबी गदा उठाने को झुका ही था कि.....
दूर हट!

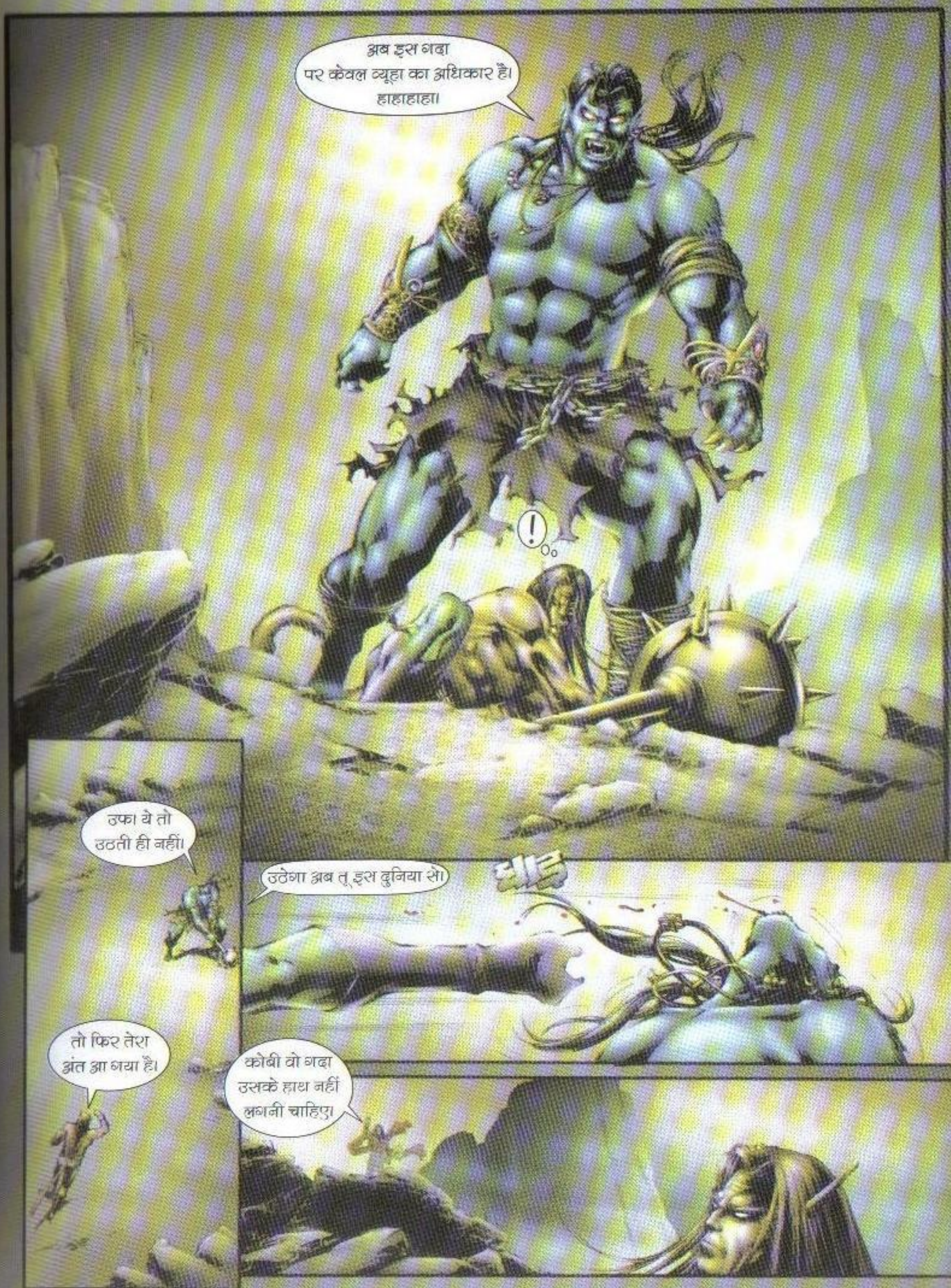
अब इस गदा पर केवल व्यूहा का अधिकार है। हाहाहाहा।
!
उफ! ये तो उठती ही नहीं।
उठेगा अब तू इस दुनिया से।
तो फिर तेरा अंत आ गया है।
कोई वो गदा उसके हाथ नहीं लगानी चाहिए।

इधर से गुजर रहा था। चमत्कारी गदा इसको मिलती देखकर उसे प्राप्त करने को लोभ संवरण ना कर सका।
किंतु मुझे भी क्या मालूम था कि गदा इतनी भारी होगी कि मैं उसे उठा ही नहीं पाऊंगा। उफ!
उफ!
ओप्फ! ये तो प्रलयंकारी लड़ाका है।
ओह तो तू अपना अस्त्र हाथ में लेना चाहता है। मगर तेरा सामना कोबी से है। अगर तू अपनी इस चेष्टा में कामयाब हो गया तो मैं अपनी पराजय कुबूल कर लूंगा।
उफ!
लड़ाका तो मैं भी प्रलयंकारी हूं।
बस मेरा अस्त्र मेरे हाथ में होना चाहिए।
अरे ये मेरा हाथ मुरझाई हुई डाली के समान झूल गया है।

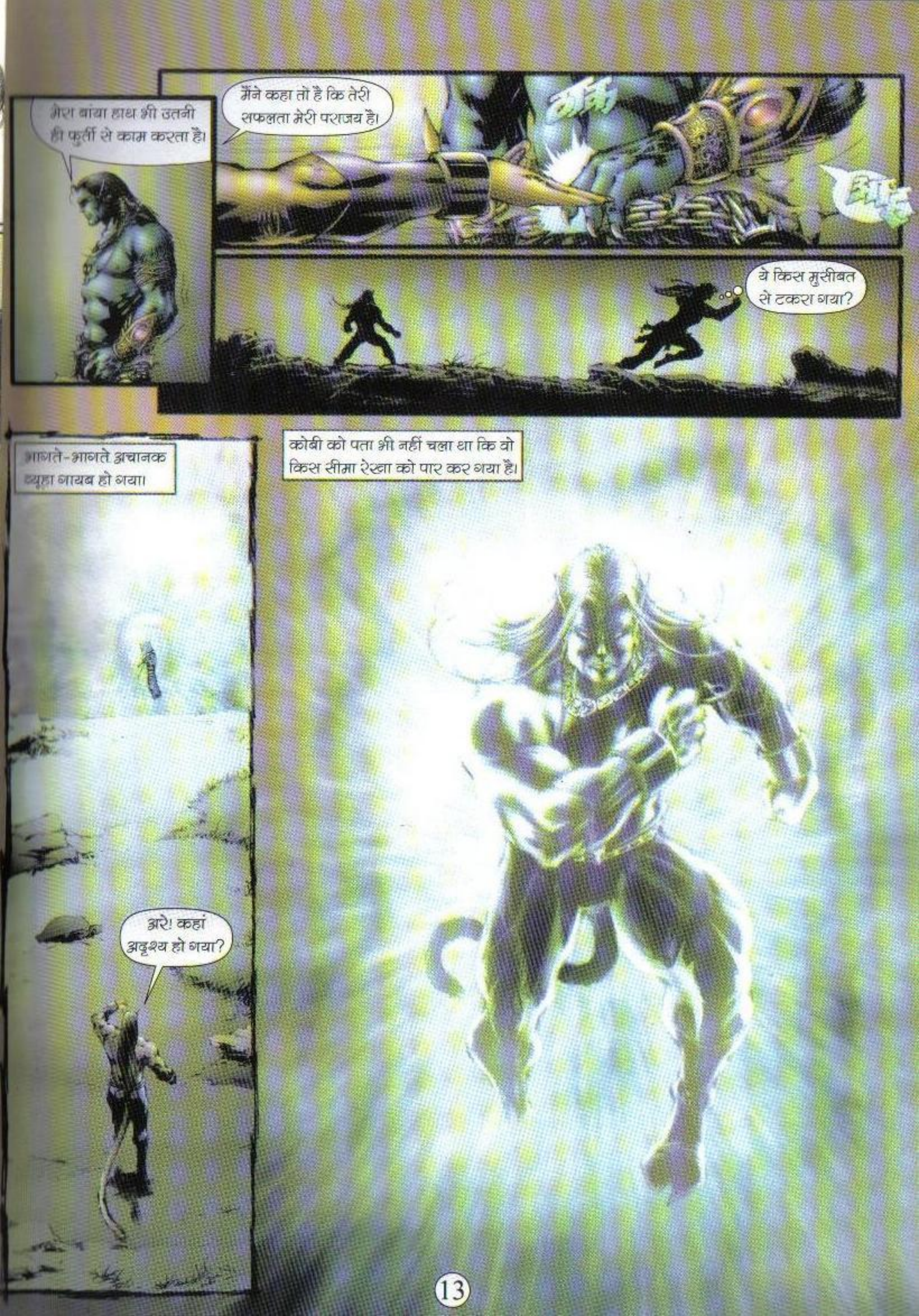
मेरा बांया हाथ भी उतनी ही फुर्ती से काम करता है।
मैंने कहा तो है कि तेरी सफलता मेरी पराजय है।
ये किस मुसीबत से टकरा गया?
भागते-भागते अचानक व्यूहा गायब हो गया।
कोबी को पता भी नहीं चला था कि वो किस सीमा रेखा को पार कर गया है।
अरे! कहां अदृश्य हो गया?

व्यूहा के व्यूह में तेरा स्वागत है कोबी। हाहाहा

ओप्फ! व्यूहा कायर अदृश्य होकर प्रहार कर रहा है?

प्रेम और जंग में सब कुछ जायज है। हाहाहा

अब यहां सिर्फ तेरी ही चीखें गूंजेंगी। हाहाहा।

!!

मारो इसको टुकड़े-टुकड़े करके व्यूह से बाहर फेंक दो।

कायर! पराक्रमी है तो सामने आ कर प्रहार कर।

पराक्रमी हूं किन्तु मूर्ख नहीं।

ओप्फ! क्या गीदड़ो के हाथों मेरी मृत्यु होगी?

ये हमें गीदड़ कह रहा है। और तुम लोग ये क्या कर रहे हो?

टुकड़े करने की इतनी जल्दी भी नहीं है।

जब तक ये निढाल होकर धूल ना फांकने लगे। तब तक इसे बुरी तरह पीटो। हाहाहा।

इसकी काया पर इतने ढेर सारे छोटे-छोटे घाव बना दो कि रक्त व प्राण धीमी गति से इसकी देह छोड़ें। हाहाहा

गुरुराज भाटिकी असहाय से खड़े थे।
कोबी किसी शैतान की व्यूह रचना में प्रवेश कर गया है। यदि मैंने उसमें प्रवेश किया तो मेरा भी वहीं हश्र होगा, जो कोबी का हो रहा है।
कोबी को शत्रु दिखाई नहीं पड़ेगा तो वह प्रहार किस प्रकार करेगा?
अरे! ये कौन है?
ये उड़ कैसे पा रहा है? और ये तो उस व्यूह रचना में प्रवेश कर गया है?
व्यूह में जाकर वो भी अदृश्य हो गया!
ओह तो तुम सब उड़ रहे हो। और अदृश्य भी हो।

तिलिस्मी शक्तियों के बल पर एक प्राणी को असहाय बनाकर उस पर प्रहार करना कायरता है।
!
कोबी ने बाज की तरह उसे धर दबोचा।
बस शैतान की दुमा अब मैं तुझे गायब नहीं होने दूंगा।
ओह! एक और!
चीर फाड़ कर चील-कौवों के भोजन के लिए फेंकूंगा तुझे।
आओ। आओ। अब कैसे सड़े फलो के समान टपक रहे हो।

कोबी ने छाती चीरकर निकाल लिये थे उनके प्राण।

कोबी को धोखे से बहुत मारा तुमने।

चूहा! तो आखिर आ गया तू भी भूमि पर। नरमखोर। मक्कार।

कोबी ने पूछ हंटर की तरह फटकारी।

तेरी तो पहले मैं खाल खिचूंगा।

कोबी ने उसे पूछ में लपेट कर उठा लिया।

मगर तू मुझसे नहीं बच सकता। क्योंकि तू मेरी पूंछ में जकड़ा हुआ है।

कोबी ने उसे अपने दोनों हाथों पर उठा लिया।

अरे! भूमि से उपर वायु क्षेत्र में जाते ही फिर से अदृश्य हो गया। तो ये जादू था।

ओह! फिर से अदृश्य हो रहा है।

कोई परवाह नहीं तू मेरे हाथों में ही है। और ये ले आखिरी पटकी। मृत्यु की पटकी।
भड़ाक
आह!
व्यूहा के शरीर के परखच्चे उड़ा डाले थे कोबी ने।
गुरुराज भाटिकी का चेहरा खिल उठा था।
कोबी मेरा पुत्र तू ठीक तो है ना?
भला आपके शिष्य को क्या हो सकता है।
शरीर पर कितने घाव खाएं है। और बड़ी-बड़ी बातें मत कर।
वो देख।
?
आह!
वो है तेरा मसीहा!
मेरा मसीहा?
हां उसी ने तोड़ा है व्यूहा के रचे इस चक्रव्यूह को!!
परन्तु उसे क्या हुआ?
आऽ

उठो पुत्र तुम ठीक हो ना?
अरे ये तो मूर्च्छित हो गया।
....म...मैं.....ओह!!
इसके मुख का आभा मण्डल इसके विलक्षण होने का प्रमाण है।
ये तकलीफ में है। इसे वुल्फानों ले चलो।
इसका शरीर तीव्र ज्वर में तप रहा है।
इसे तुरन्त उपचार की आवश्यकता है।
मूर्ख था व्यूहा जो गदा को पाना चाहता था।
यदि वो प्राप्त कर भी लेता। तो भेड़िया देवता का मंत्र सिद्ध किए बिना उसे धारण नहीं कर सकता था।
गुरुराज भेड़िया देवता की वो गदा कहां गई, जिसके पीछे ये सारा हंगामा हुआ?

भेड़िया देवता की गदा पुनः भेड़िया देवता के पास लौट गई है। अब वो पुनः तभी तुम्हारे हाथों में प्रकट होगी जब तुम उसका आवाहन करोगे।

आह! त...त...तुरीन!

भाटिकी को उस विलक्षण वीर योद्धा की चिंता थी।

इसके सिर में हो रही असहनीय पीड़ा और तीव्र ताप अर्थात ज्वर मुझे शंकित कर रहे हैं कि इसे अत्यन्त घातक मस्तिष्क ज्वर का प्रकोप है। जो कि निरंतर बढ़ता जा रहा है।

त...त...तुरीन!

ये ज्वर इस महाबली के प्राणों के लिए संकट उत्पन्न कर सकता है।

कोबी ज्वर औषधियों को जल्दी पीसो।

इसने कोबी की मदद की है गुरुराज। इसके प्राणों की रक्षा के लिए तो मैं स्वयं यमराज से भी लड़ जाऊंगा।

भाटिकी शीतल जल से उसके ज्वर के तापमान को कम करने की चेष्टा कर रहे थे।

गुरुराज ये लीजिए ज्वर औषधि।

इसके बाजू पर ये कैसा चिन्ह है? जैसे कोई सुई चुभोई गई हो।

इसका लेप इसके मस्तिष्क पर करने के पश्चात इसके ज्वर के उतरने की प्रतिक्षा करने से अधिक हम और कुछ नहीं कर सकते।

आह....त...तुरीन!

इसको ठीक होना ही होगा।

इसके शरीर पर असंख्य घाव है।
ये व्यूहा वाली घटना के घाव नहीं हैं।
क्योंकि जब मैंने इसे व्यूह में प्रवेश करते देखा था तो इसके वस्त्र कई स्थान पर फटे थे और ये पहले से ही घायल भी था।
एक सप्ताह पश्चात----
भोकाल ने आंखे खोल दी थीं।
ईश्वर का लाख-लाख धन्यवाद। एक सप्ताह लगा तुम्हे पूर्णतयः होश में आने में।
एक सप्ताह से तुम्हारे विषय में जानने की उत्सुकता व इच्छा बनी हुई है।
तुम कौन हो पुत्र?
कहां से आए हो?
भोकाल ने उठने की चेष्टा की।
ना ना! लेटे रहो। भले ही अब तुम मस्तिष्क ज्वर से पीड़ित नहीं हो।
किंतु अभी भी तुम्हे पूर्णतयः स्वस्थ होने में दो तीन सप्ताह लगेंगे। तुम्हे पूर्ण रूप से विश्राम की आवश्यकता है।
गुरुराजा ये मूर्च्छा से बाहर आ रहा है।
आ...ह...त...तुरीन!

इससे पहले की तुम कुछ कहो मैं तुम्हे अपना परिचय दे दूं।
मेरा नाम कोबी है।
और ये मेरे गुरुराज भाटिकी।
मेरे माता, पिता, मित्र, गुरु। सभी कुछ गुरुराज भाटिकी ही हैं।
और इस वक्त तुम भेड़ियों की भूमि वुल्फानों पर उपस्थित हो।
!
गुरुराज भाटिकी के स्वर में पीड़ा को महसूस किया कोबी ने।
भोकाल अपने विषय में सब कुछ बताने के साथ ही पीड़ा भरे स्वर में कह उठा---
मैं अपने कर्त्तव्य से चूंक गया गुरुराज भाटिकी। मेरे जीवन का अब कोई अर्थ नहीं रहा। मर जाने दिया होता मुझे।
मैं तो तुम्हे देखते ही समझ गया था कि तुम कोई साधारण व्यक्ति नहीं हो।
मैं तुमसे पूछना चाहता हूं पुत्र भोकाल कि कोबी को संकट ग्रस्त देखकर तुम उसकी मदद के लिए क्यों आए थे?
वास्तव में कोबी ऐसी व्यूह रचना में फंस गया था, जहां भूमि से स्पर्श करने पर काया दृष्टिगोचर होने लगती थी। मैं वायु में उड़ते हुए ही उन शत्रुओं का सामना कर सकता था।
जब मैंने उसे संकट ग्रस्त देखा तो मैं उसे अनदेखा कैसे कर सकता था।
मस्तिष्क ज्वर के कारण मुझे अपने समक्ष मृत्यु दिखाई पड़ रही थी।
किंतु संकटग्रस्त प्राणी की मदद का वो अवसर भी मैं नहीं चूक सकता था।
तो फिर तुम्हे संकट में पड़े देखकर हम ये अवसर कैसे चूक जाते।
भोकाल पुत्र। कोई भी नकारात्मक सोच व्यक्ति में हीन भावना का उदय करती है।
हीन भावना से ग्रस्त व्यक्ति आवेश में भर उठता है और आवेश उसे आत्महत्या की ओर प्रेरित करता है।

तुम्हारी व्यथा सुनकर और तुम्हारी बाजू पर सुई चुभोने का ये चिन्ह देखकर मैं समझ गया हूं कि भयंकर षड्यंत्र के तहत तुम्हारी हत्या की चेष्टा की गई है भोकाल।

तुम्हे मस्तिष्क ज्वर का शिकार बनाया गया है।

मुझे दुःख केवल इस बात का है स्वंय मेरी पत्नी रूपसी भी इस षड्यन्त्र मे शामिल है।

काला चेचक ने हजारो निर्दोष नागरिकों को काल का शिकार बना दिया है।

मेरी विवशता ये है कि मैं विकास नगर नहीं लौट सकता।

क्योंकि मैंने ऐसी चेष्टा की तो मैं स्वयं भी उसका शिकार बन जाऊंगा।

और यदि मैंने वहां जाकर शत्रुओं के सिर धड़ से अलग नहीं किए तो मेरी अन्तर्आत्मा मुझे धिक्कारती रहेगी।

अब आप ही बताऐं गुरुराज भाटिकी कि इस दुख के साथ मैं किस प्रकार से जीवित रह पाऊंगा।

जीवन स्वयं एक युद्ध है पुत्र। इस युद्ध पर विजय प्राप्त करने के लिए हमें निरन्तर मुश्किलों का समाना करना पड़ता है...।

....स्वंय को उन मुश्किलों के अन्त के लिए तैयार करना पड़ता है...।

जब तक बाढ़ ना आए बांध बनाने को कोई नहीं सोचता।
शीत हमें ऊष्ण वस्त्र बनाने को प्रेरित करती है तो ग्रीष्म छाया की खोज के लिए।
हम स्वंय को इनमें से किसी भी संकट के सुपुर्द नहीं कर सकते। क्षणिक संकटो से उबरने के लिए उपाय करने पड़ते है।
और ऐसा तभी हो सकता है जब हम अपने विचारों से नाकारात्मक सोचों को बाहर करके उन में विजय का आत्म विश्वास भरें।
त...तुरीन?
आप तुरीन के विषय में कैसे जानते हैं?
और तुम्हारा आत्मविश्वास है तुरीन।
उत्तर कोबी ने दिया।
सप्ताह भर तुम्हारी जिव्हा एक ही नाम बड़बड़ाती रही मित्र भोकाल। और तुम कह रहे हो किस प्रकार जानते हैं? हाहाहहा।

ये देखो। तुरीन, तुरीन सुनते-सुनते कान पक गए। हाहाहा।
हाहाहा
!
ओह ! क्षमा चाहता हूँ।
अब शीघ्रता से फलों का ये रस ग्रहण करो....।
...और बताओ, कि कौन है तुरीन?
आत्मविश्वास का संबल साथ हो तो व्यक्ति बड़े-बड़े समुद्र भी लांघ जाता है। ऊंचे-ऊंचे पहाड़ भी चढ़ जाता है। तुरीन के विषय में हमें बताओ पुत्र।
तुरीन मेरी पत्नी 'थी'
क्या?

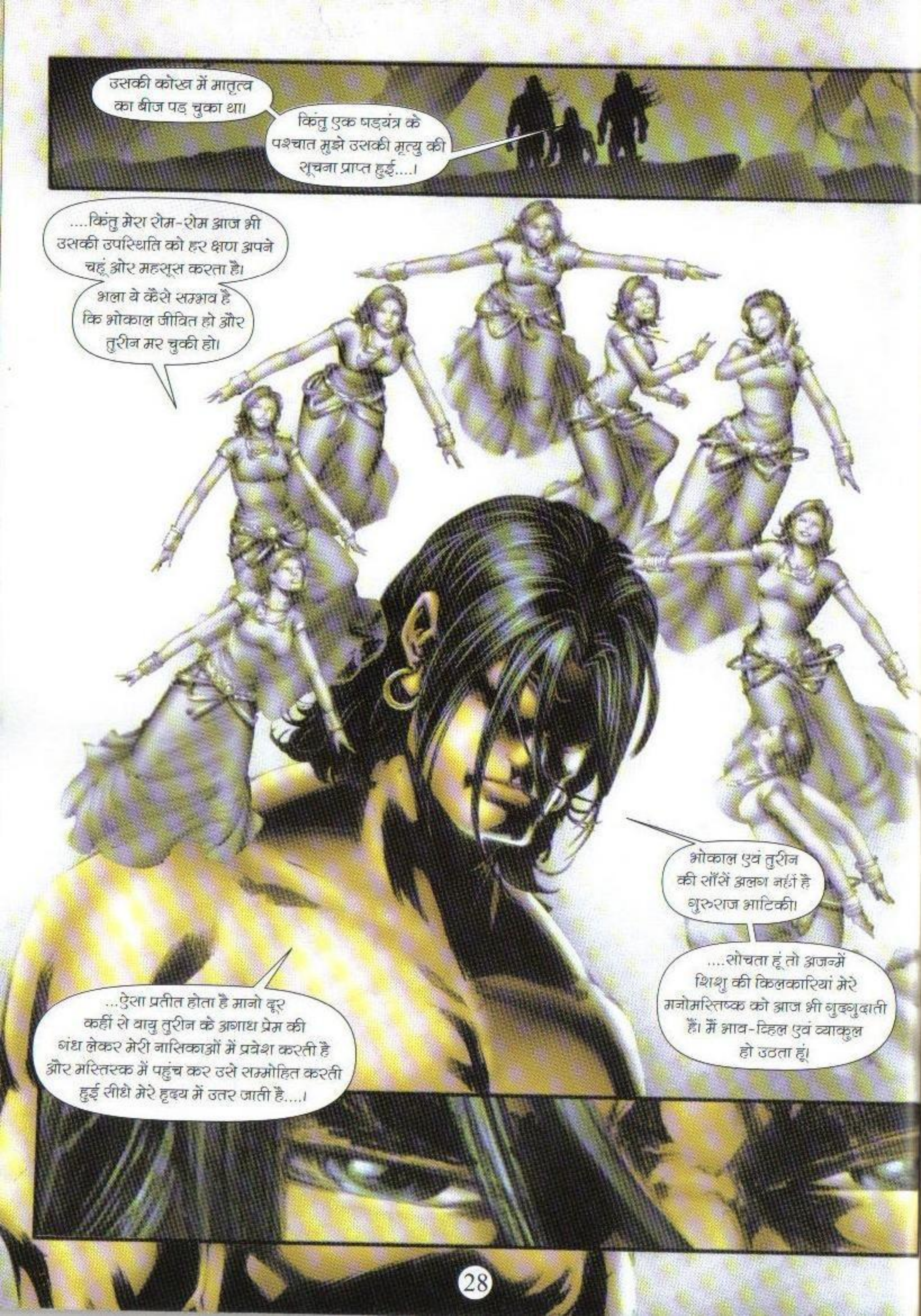
उसकी कोख में मातृत्व का बीज पड़ चुका था।
किंतु एक षड्यंत्र के पश्चात मुझे उसकी मृत्यु की सूचना प्राप्त हुई....।
....किंतु मेरा रोम-रोम आज भी उसकी उपस्थिति को हर क्षण अपने चहूं ओर महसूस करता है।
भला ये कैसे सम्भव है कि भोकाल जीवित हो और तुरीन मर चुकी हो।
भोकाल एवं तुरीन की साँसें अलग नहीं है गुरुराज आटिकी।
....सोचता हूं तो अजन्में शिशु की किलकारियां मेरे मनोमस्तिष्क को आज भी गुदगुदाती हैं। मैं भाव-विह्वल एवं व्याकुल हो उठता हूं।
...ऐसा प्रतीत होता है मानो दूर कहीं से वायु तुरीन के अगाध प्रेम की गंध लेकर मेरी नासिकाओं में प्रवेश करती है और मस्तिस्क में पहुंच कर उसे सम्मोहित करती हुई सीधे मेरे हृदय में उतर जाती है....।

...कान जैसे उसका स्वर सुनने लगते हैं....।
...जिव्हा अनायास ही उसका नाम पुकार उठती है...।
और मैं विक्षिप्तों के समान पुकार उठता हूं...।
तुरीन!
तुरीन!!
तुरीन!!!
आSSSह! ओफ्फ!
ओह नहीं। रोगों से दुर्बल तुम्हारा मस्तिष्क भावनाओं के आवेग का भार नहीं झेल पा रहा है....।
....तुम विश्राम करो भोकाल...।
...तुम विश्राम करो।

मैं तुमसे वादा करता हूं भोकाल। यदि तुम्हारी पत्नी तुरीन जीवित है तो वो संसार के किसी भी कोने में क्यों ना हो, मैं उसे अपनी यौगिक शक्तियों के बल पर खोज निकालूंगा।
और ये कोबी का वायदा है मित्र भोकाल।
संकटो के चाहे कितने भी समुंद्र लांघने पड़ें।
चाहे हजारों पर्वतों के सीने चीरने पड़े...।
यदि तुरीन है तो अपनी जान देकर भी कोबी उस स्थान से तुम्हारी तुरीन को लाएगा।
उफ। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे जीवन पुनः मेरी रगों में दोगुनी रफ्तार के साथ संचार कर रहा है।
अरे! तुम फिर उठ गए। सुना नहीं गुरुराज भाटिकी ने कहा था कि तुम्हे सख्त विश्राम की आवश्यकता है।
अधिक व निरंतर विश्राम रोग के अहसास को और बढ़ाता है। मित्र कोबी।
तो फिर ठीक है। जब तक मैं अपनी यौगिक साधना पूर्ण करूँ, तब तक तुम किसी भी 'व्यूह-रचना' को समझने, उसमें प्रवेश करने और उस व्यूह रचना को तोड़ने की कला मेरे शिष्य कोबी को सिखाओ।
??
आप के सम्मुख मेरी भला क्या बिसात, जो मैं आपके शिष्य को कुछ सिखाऊं।

वृक्ष चाहे कितना ही विराट व विशाल सही किंतु पौधा उसके बीज की क्षमताओं के अनुसार फलता और फूलता है।
किंतु यदि कोई माली चाहे तो उसकी क्षमताओं व गुणों में वृद्धि करके उसे और अधिक हरा भरा बना सकता है। तुम मेरा आशय समझ गए होंगे।
यदि ऐसी बात है तो मैं तैयार हूं।
इसका तात्पर्य ये है कि मैं एक शिष्य की श्रद्धा भावना मन में लिए आपकी विद्या को ग्रहण करने के लिए तैयार हूं। गुरू भोकाल।
!
पहले अपने गुरू के चरण स्पर्श कर लूं।
?
तो फिर मणिक रुको!!!!
?!

मित्र भी मित्र को सिखा सकता है।
तो फिर ठीक है। तुम मित्र बन कर सिखाओ मैं शिष्य बनकर सीखूंगा।
गुरूराज भाटिकी यौगिक शक्तियों के बल पर तुरीन की खोज में जुट गए थे।
और भोकाल कोबी को व्यूह रचनाओं के अद्भुत संसार से परिचित करा रहा था।
व्यूह में फंसा शिकार उस कीड़े के समान होता है, जिस पर हर शिकारी की गिद्ध दृष्टि लगी होती है।

सप्ताह पश्चात् का वह सूर्योदय
उसीच की लहरों में विश्वास
की चमक लेकर आया था।
गुरु भोकाल समाचार सुनने के लिए हमें इस ठूंठ से उतरकर नदी की तेज धारा को पार कर किनारे पर पहुंचना होगा।
वो देखो। राह निकल आई।
कभी-कभी किनारे पर खड़े सूखे तने या वृक्ष इत्यादि नदी के जल में बहते हुए धारा के बीच आ निकलते हैं...।
मैं तुम्हे व्यूह रचना का एक और सबक सिखा रहा था कि संकट के बीच धैर्य का कितना महत्त्व होता है?
तीव्र धारा में ठूंठ छोड़ने पर प्रचण्ड धारा तुम्हे ले डूबेगी।
तीव्र धारा में बहता तना.....
पुत्र भोकाल तुम्हारे लिए अत्यन्त प्रसन्नता भरा समाचार है!!

...धारा से निकलने का प्रशस्त मार्ग हो सकता है...।
गुलुप
तना इन चट्टानों में अटक गया है। यहां से हम इन चट्टानों पर चढ़ कर....
और अपनी क्षमताओं का प्रयोग करके बाहर जा सकते हैं। क्योंकि यहां पर धारा का वेग अपेक्षाकृत क्षीण है।
!
भोकाल।
तुम तो नदी की चौड़ी धारा को पार कर उस तरफ पहुंच गए। मगर मैं इतनी लम्बी छलांग कैसे लगाऊं?
अपनी क्षमताओं को पहचानो कोबी तुम एक भेड़िया हो।
और भेड़िया चाहे तो लम्बी छलांग लगाने में हिरण को भी मात दे सकता है।
ये बाता

जय गुरू भोकाल!!!
हे भेड़िया देवता मदद!!

आह!!! मरा!!!
मूर्ख कोबी गदा का आवाहन क्यों किया?
वो मारा!!
मित्र कोबी। तुमने कर दिखाया।
कोई भयंकर संकट पड़ने पर भी अभी गदा का आवाहन मत करना।
चट्टान से किनारे पर कूदने की क्षमता बढ़ाने के लिए मैंने तो भेड़िया देवता का उच्चारण किया था। गुरुराज भाटिकी। मुझे क्या पता था कि हाथ में गदा आ जाएगी।
....क्योंकि मैं समझ चुका हूं कि तुम्हारी कलाईयां भेड़िया देवता की दिव्य एवं प्रचंड प्रलयकारी गदा को धारण करने में अभी अक्षम हैं।
तुम्हारी कलाइयों में गदा को उठा पाने की क्षमता विकसित करने में मुझे अभी कुछ और उपाय करने होंगे।
गुरुराज भाटिकी को कोबी में कुछ शक्तियों को और अधिक विकसित करने का समय चाहिए था।
शुक्र है गदा की मार के कारण तुम बीच धार में नुकीली चट्टानों पर नहीं गिरे।
गुरुराज भाटिकी। आप कुछ कह रहे थे जो उस वक्त जल के तीव्र शोर के कारण हम सुन नहीं पाए।
सुनोगे तो प्रसन्नता से उछल पड़ोगे भोकाल।
तुम्हारी पत्नी तुरीन के जीवित होने के संकेत प्राप्त हुए हैं।
क्या?
क्या सच गुरुराज भाटिकी?

ओह! ये मैं क्या कह गया?
आपकी यौगिक क्षमताओं पर संदेह किया मैंने?
प्रसन्नता के आवेग में ऐसा होता है भोकाल।
उत्तर की ओर करावली की पहाड़ी के समीप मुझे तुरीन के होने के संकेत मिले हैं।
किंतु शायद वो किसी सुरक्षा कवच में कैद है, जिस कारण मैं तुरीन से मानसिक सम्पर्क स्थापित नहीं कर सका।
अन्यथा उसकी सही वह स्पष्ट स्थिति व तस्वीर मुझे ज्ञात हो जाती।
तुरीन की खोज में अब मैं करावली का कोना-कोना, चप्पा-चप्पा छान मारूंगा।
मेरे लिए इतनी सूचना भी ऊर्जावान है गुरुराज भाटिकी।
आज सिद्ध हो गया गुरुराज भाटिकी कि भले ही इस रहस्य को मैंने ना समझा हो, किंतु भोकाल के श्वास उसको छल नहीं रहे थे।
उनमें तुरीन के श्वासो का अहसास था।
और निश्चित् ही यही अहसास मेरे जीने की वजह बना।

भोकाल के नेत्र पटल पर अतीत चल चित्र की भांति चलने लगा।
अरे! तुरीना ये क्या?
तुम्हारे पांव की एक पायल कहां गई?

भ....भोकाल। उधर झाड़ियों में विषधर है।
विषधर? कहां?
कृपा कर आप यहां से हट जाएं भोकाल।
अरे। विषधर था। चला गया। अब पायल खोजने दो।
उदास ना हो तुरीना।
अवश्य ही यहीं कहीं गिरी होगी।
मैं अभी खोज निकालता हूं।
आप के हाथ कांटों की खरोंचों से घायल हो गए हैं।
घायल? कहां?
ओह। ये खरोंचे बहुत मामूली सी हैं। तुम्हे घबराने की आवश्यकता नहीं है प्रिये।
किंतु उस पायल को तो मैं खोज कर... अरे मिल गई।

भोकाल! क्या हुआ आपको?

आह.....!

उफ आपके मुंह से तो नीले झाग निकल रहे हैं।

त...तुम व्यर्थ चिंता....

सर्प दंश के चिन्ह?

भोकाल को सर्प ने डसा है!!

नहीं!

इस विष को यदि प्राण लेने है तो मेरे लेगा।

तुरीन मानो सारा विष चूस निकालना चाहती थी।

तुरीन ने भोकाल के पांव से काफी सारा विष चूस कर उगल दिया था...।
इसी कारण प्राण बच सके भोकाल के। अन्यथा विष अत्यन्त खतरनाक था। कुछ भी अहित हो सकता था।
उफ भोकाल! तुम्हे कांटो की खरोचों और सर्प दंश तक का भी पता नहीं चला?
सचमुच पता नहीं चला। मेरे ज़हन पर केवल तुम्हारी खोई हुई पायल को खोजने का जुनून सवार था।

....ओफ्फ भोकाल
ये दीवानापन है।

मुझे फिक्र नहीं
प्रेम दीवानगी का ही दूसरा
नाम है तुरीना।

मुझे ऐसे दीवाने
प्रेम की आवश्यकता नहीं जिसमें
जान पर बन आए।

प्रेम में ऐसी
दीवानगी ने ही तो मेरे प्राणों
की रक्षा की है।

वो प्रेम की दीवानगी ही तो थी,
जिसके वशीभूत होकर तुमने सर्पदंश
के विष को अपनी जान की परवाह
ना करते हुए भी स्वंय चूसना
आरम्भ कर दिया था।

एक पायल को खोजने
में तुम सारा संसार भुला बैठे
और यदि किसी दिन मैं स्वंय
खो गई तो?

तुम्हे अपनी सांसो में खोजूंगा।

गुरुराज भाटिकी ने झकझोर कर भोकाल को अतीत की यादों से बाहर निकाला।
भोकाल! कहां खो गए?
आ
मैंने तुरीन की ऐसी आशंका पर उलटे कहा था गुरुराज भाटिकी कि यदि वो खो गई तो मैं उसे अपनी सांसों में खोजूंगा...।
किंतु मैं ऐसा न कर पाया।
शायद तुरीन से सच्चा प्रेम नहीं किया था मैंने।
अपनी तीनों पत्नियों में तुरीन से ही सच्चा प्रेम किया है तुमने। क्योंकि हृदय, जुबान और जेहन में बसा प्रेम ही सच्चा प्रेम होता है।
और तुरीन नाम तुम्हारे हृदय, जुबान व जेहन में बसा है। हां। इस नाम पर तुरीन की मृत्यु शब्द के खौफ की जो धूल जमा हो गई थी, उसे शायद तुम्हारी दोनों पत्नियों की उपस्थिति में हटने का अवसर नहीं मिला।
अब वो धूल हट व छंट चुकी है।

धृष्टता की क्षमा चाहता हूं। किंतु गुरुराज, आपने बिना किसी विशेष जानकारी के तुरीन का पता कैसे लगाया?
ये सच है कि तुमने मुझे तुरीन के विषय में कुछ नहीं बताया किंतु तुम्हारा मस्तिष्क तो उसके विषय में जानता है।
मैंने तुम्हारे मस्तिष्क की स्नायु ऊर्जा को ग्रहण कर उसे गुप्तचर की तरह पृथ्वी के प्रत्येक हिस्से में दौड़ाया..।

ताकि यदि तुरीन पृथ्वी पर कहीं जीवित हो तो वो स्नायु ऊर्जा सीधे जाकर तुरीन से मानसिक सम्पर्क साध ले।
तुम्हारे मस्तिष्क की स्नायु ऊर्जा करावली की पहाड़ियों में जाकर रुक गई। अन्यथा वो गतिमान रहती। इसका अर्थ ये हुआ कि तुरनी वहीं कहीं पर है।

तो मुझे आज्ञा दें गुरुराज। मैं उत्तर में स्थित करावली पहाड़ियों के कण-कण में अपनी तुरीन को खोजूंगा।
आज जब जीवित रहने के सभी सहारे टूट चुके हैं तो जीवन की इच्छा जागृत करने वाली इस टिमटिमाती 'लौ' को मैं बुझने नहीं दूंगा।
?

क्षमा करें गुरु भोकाल। तुम्हारी मूर्च्छा अवस्था में मैंने गुरु पत्नी तुरीन को लाने का प्रण किया था।
क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारे शिष्य का प्रण झूठा साबित हो?
ये तुम क्या कह रहे हो कोबी?

गुरु पत्नी को ढूंढने मैं जाऊंगा।
त....तुम, कोबी?
हां गुरु भोकाल।
और वैसे भी ये नियम है कि गुरु दक्षिणा के अभाव में सीखी गई शिक्षाओं का कोई प्रतिफल प्राप्त नहीं होता।
मैंने तुम्हे अपने मित्र के अलावा अपना गुरु भी माना है।
अब गुरु दक्षिणा देने का समय आया है तो किसी भी मूल्य पर मैं पीछे नहीं हटूंगा।
मुझे हतोत्साहित ना किया जाए गुरु भोकाल!!!
इसके पीछे एक महत्त्वपूर्ण कारण तुम्हारा अस्वस्थ होना भी है।
कोबी का कथन सत्य है भोकाल।
अभी तुम्हारा मस्तिष्क ज्वर के विषाणुओं से पूर्णतयः मुक्त नहीं हुआ है।
कैसा भी निरन्तर शारीरिक श्रम उन विषाणुओं को पुनः गम्भीर रूप से सक्रिय कर सकता है। तुम्हे विश्राम की सख्त आवश्यकता है।

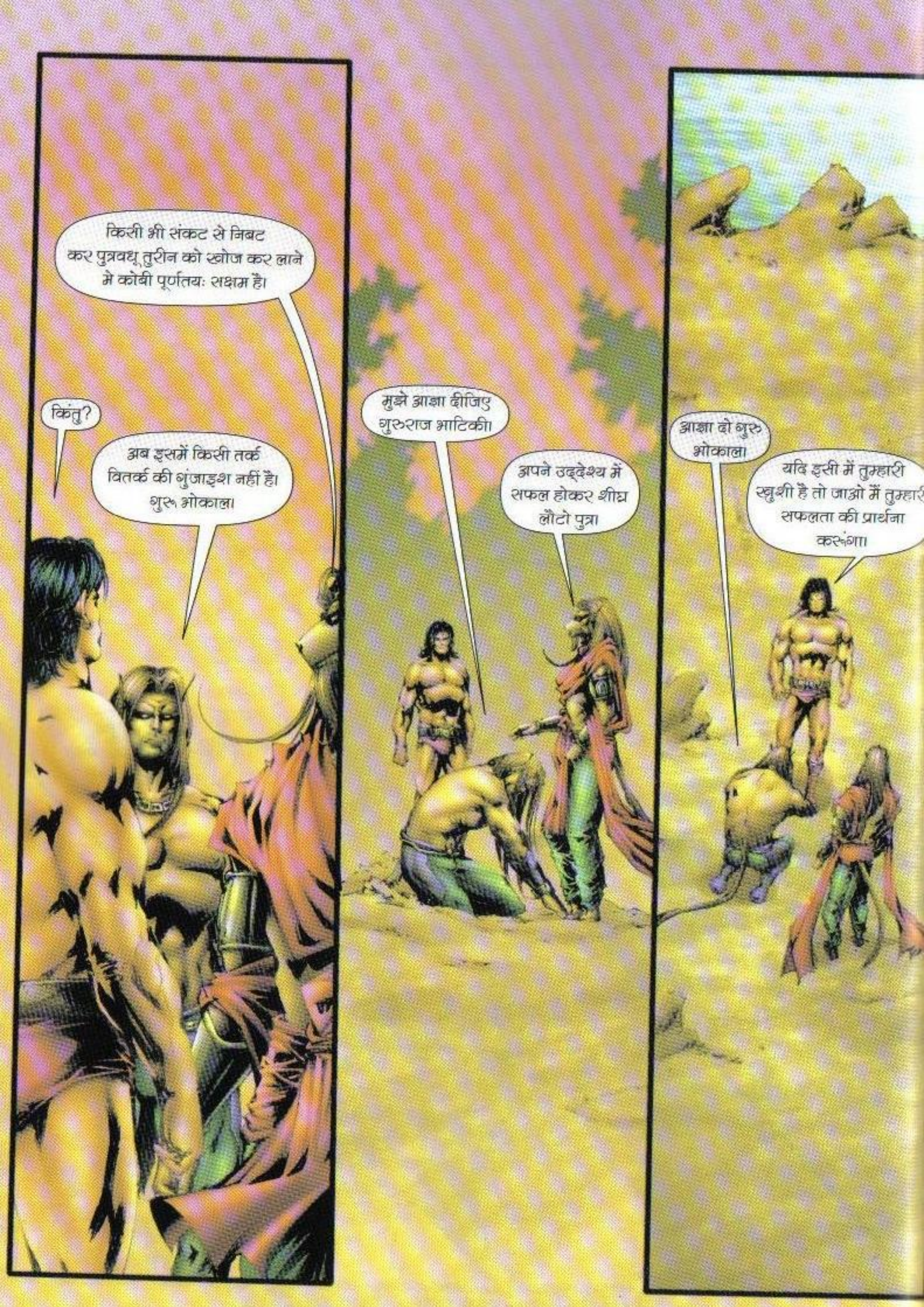
किसी भी संकट से निबट कर पुत्रवधू तुरीन को खोज कर लाने मे कोबी पूर्णतयः सक्षम है।
किंतु?
अब इसमें किसी तर्क वितर्क की गुंजाइश नहीं है। गुरू भोकाल।
मुझे आज्ञा दीजिए गुरुराज भाटिकी।
अपने उद्देश्य में सफल होकर शीघ्र लौटो पुत्र।
आज्ञा दो गुरु भोकाल।
यदि इसी में तुम्हारी खुशी है तो जाओ मैं तुम्हारी सफलता की प्रार्थना करूंगा।

वो तो ठीक है। किंतु तुरीनश्री को मैं पहचानूंगा कैसे?
बहुत सरल है।

भोकाल तुरीन के सौन्दर्य सागर में डूबने लगा।

उसके नेत्रों में सागर की गहराई दिखेगी। और पलकों पर ठिठकी बूंदों के रूप में सागर लरजता दिखेगा।

ध्यान से देखना पुतलियों में दुख के भंवर होंगे।

...उसके मुख पर चंद्रमा अपनी आभा बिखेरता तो होगा....।

किंतु मन की उदासी चेहरे को धूमिल करती होगी...।

उसके लहराते केशों में झरने सी पवित्रता महसूस होती होगी....।

मगर कुछ वे लटें उलझी भी होंगी, जिन्हे भोकाल सुलझाया करता था।

बस बस। बस करो गुरू भोकाल। अब मैं तुरीन श्री को स्वंय ही पहचान लूंगा।

लब मेरा नाम तो पुकारते होंगे।

किंतु इस भय से उसके 'लब' आपस में इस कदर सटे भी होंगे, कि कहीं मेरा नाम भी होंठों से दूर ना हो जाए।

अरे सुनो तो कोबी तुरीन का पूर्ण विवरण तो सुनते जाओ।

गुरू भोकाल अब तो आज्ञा ही दें।

बाप रे वापस लौट कर गुरु भोकाल से कविता पाठ भी सीखूंगा।

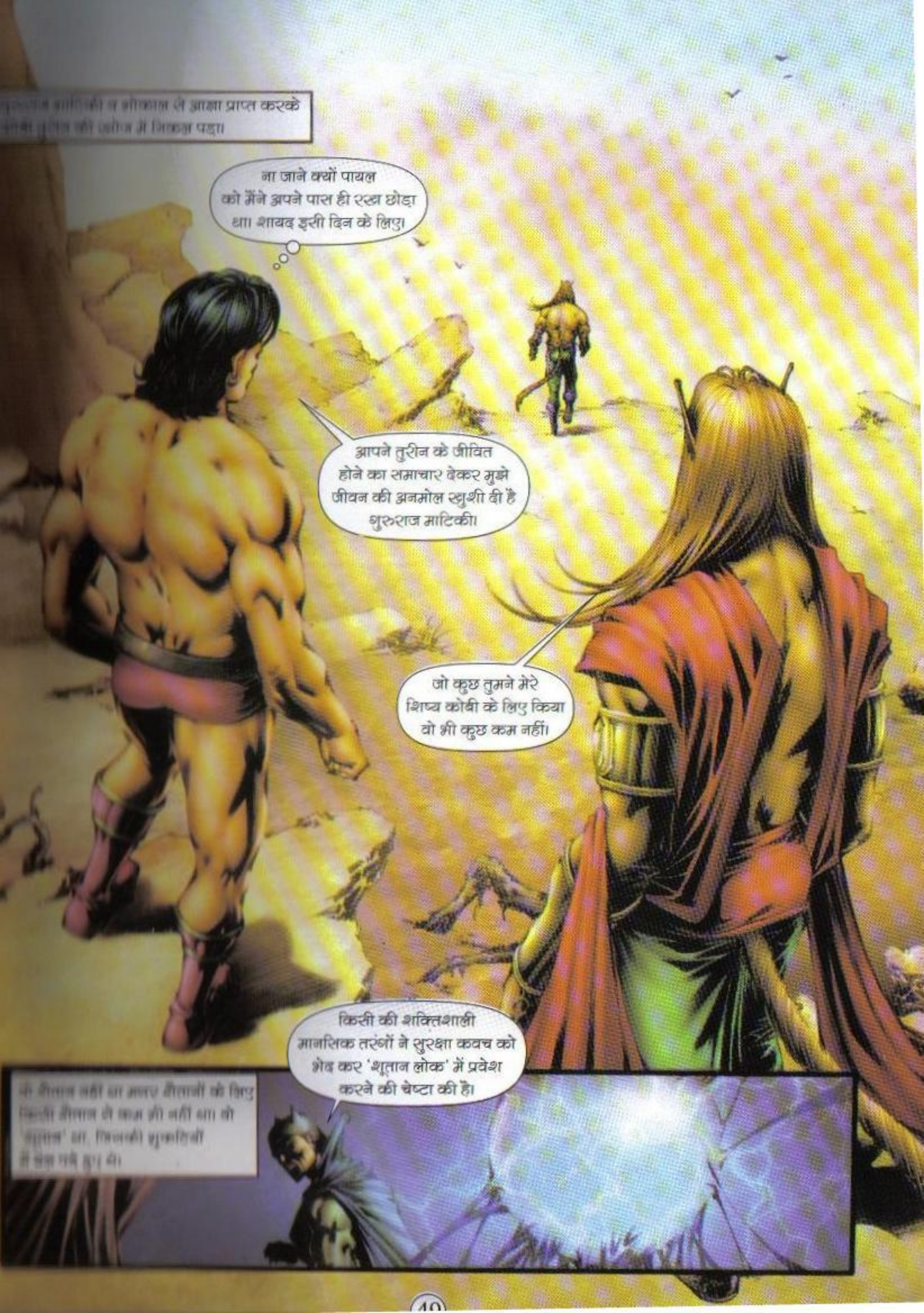
[illegible] माटिकी व शोकाल से आज्ञा प्राप्त करके [illegible] की खोज में निकल पड़ा।
ना जाने क्यों पायल को मैंने अपने पास ही रख छोड़ा था। शायद इसी दिन के लिए।
आपने तुरीन के जीवित होने का समाचार देकर मुझे जीवन की अनमोल खुशी दी है गुरुराज माटिकी।
जो कुछ तुमने मेरे शिष्य कोबी के लिए किया वो भी कुछ कम नहीं।
किसी की शक्तिशाली मानसिक तरंगों ने सुरक्षा कवच को भेद कर 'शुतान लोक' में प्रवेश करने की चेष्टा की है।
[illegible] शैतान नहीं था अपर शैतानों के लिए किसी शैतान से कम भी नहीं था वो 'शुतान' था, जिसकी शुक्तियों से [illegible] हुए थे।